# Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

## फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की तृतीय बैठक की संस्तुतियॉ

**दिनॉक : 13 मई, 2015**
**समय : 11.00 बजे**
**स्थान : उपकार सभाकक्ष**

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की तीसरी बैठक डा. आई.एन. मुखर्जी, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 13 मई, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक, मौसम विज्ञान विभाग, अमौसी, लखनऊ; च.शे.आ. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर व न.दे. कृषि, प्रौ. विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम वैज्ञानिक; फसल वैज्ञानिक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिक, उद्यान विभाग, गन्ना विभाग, रेशम विभाग, मत्स्य विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 13 मई से 19 मई, 2015 तक) प्रदेश में इस सप्ताह मौसम मुख्यतया प्रथम दो दिन दिनांक 13 एवं 14 मई 2015 को प्रदेश के पूर्वी एवं मध्यांचल के कुछ जनपदों में हल्के से मध्यम बादल छाये रहने के कारण छिटपुट बूंदाबांदी व स्थानीय स्तर पर कहीं–कहीं हल्की वर्षा के आसार हैं और सप्ताह के शेष दिनों में हल्की बदली की मौजूदगी के बावजूद मौसम शुष्क रहेगा। इस सप्ताह प्रदेश के पूर्वी क्षेत्रों में प्रथम दो दिनों तक दक्षिण–पूर्वी तथा शेष दिनों में प्रदेश में मुख्यतया उत्तरी–पश्चिमी हवाएँ (औसत गति 14–16 किमी./घण्टा) जो कहीं–कहीं पर धूल युक्त चलने के आसार हैं। अधिकतम तापमान औसत रूप से सप्ताह के प्रथम दो दिनों में 36–38 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 23 से 26 डिग्री सेल्सियस जो सामान्य से 2–3 डिग्री कम एवं शेष दिनों में अधिकतम तापमान 41 से 43 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस रहने की सम्भावना है जो सामान्य से 3–4 डिग्री सेल्सियस अधिक है। सापेक्षिक आर्द्रता प्रातःकाल 55–60 प्रतिशत एवं दोपहर के समय 35–40 प्रतिशत बने रहने के आसार हैं। कुल मिलाकर इस सप्ताह मौसम शुष्क रहेगा।

कृषि विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार जायद में बोई गई विभिन्न फसलों की बुवाई दिनांक 28 अप्रैल, 2015 (अनंतिम) तक सम्पूर्ण लक्ष्य 18.46 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 17.62 लाख हेक्टेयर में हुई है जो लक्ष्य का 95.47 प्रतिशत है। मक्का की बुआई 0.9 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 1.03 लाख हेक्टेयर में हुई है जो लक्ष्य का 115.4 प्रतिशत है। बाजरे की प्रतिपूर्ति 0.5 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.49 लाख हेक्टेयर हुई जो लक्ष्य का 97.46 प्रतिशत है। मूंग की बुआई 1.21 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 1.99 लाख हेक्टेयर में हुई जो लक्ष्य का 163.9 प्रतिशत है। उर्द की बुआई 0.68 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.59 लाख हेक्टेयर में हुई जो लक्ष्य का 87 प्रतिशत है। अन्य फसलों में सूरजमुखी लक्ष्य के सापेक्ष 23.3 प्रतिशत, कपास लक्ष्य के सापेक्ष 74.8 प्रतिशत, जायद धान की बुआई लक्ष्य के सापेक्ष 98.3 प्रतिशत तथा चेना की बुआई लक्ष्य के सापेक्ष 32.5 प्रतिशत में हुई है।

**अतः प्रदेश में फसल एवं मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–**

- गेहूँ की कटाई के बाद फसल अवशेष को कदापि न जलायें बल्कि इसे खेत में सड़ाकर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ायें। गेहूँ के अवशेष को सड़ाने के लिए प्राथमिकता के आधार पर 5 टन/हे0 की दर से गोबर की खाद डालें। गोबर की खाद उपलब्ध न हो तो 20 किग्रा./हे. अतिरिक्त नत्रजन अथवा 2.5 किग्रा./हे. ट्राईकोडरमा बिरडी को मिट्टी या बालू में मिलाकर जुताई से पहले खेत में डालकर मिला दें।
- भूमि जनित रोगों के नियंत्रण हेतु *ट्राइकोडर्मा विरिडी* 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा *ट्राइकोडर्मा हरजियेनम* 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. 60–75 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से शीथ ब्लाईट, मिथ्या कण्डुआ आदि रोगों से बचाव किया जा सकता है।
- उर्द, मूँग, सूरजमुखी की फसलों एवं लीची व आम के बागों में पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- धान की रोपाई वाले प्रक्षेत्रों में हरी खाद के लिए सनई एवं ढ़ैंचा की बुआई करें। सभी जनपदों में कृषि विभाग के गोदामों पर ढैंचा का बीज उपलब्ध है।
- ब्लाक स्तर पर खरीफ फसलों के संकर बीजों की खरीदारी हेतु मेले का आयोजन किया जा रहा है जिसमें सभी बीज विक्रेता अपने स्टॉल लगाएंगे। कृषक फसलों के बीज यहाँ प्राप्त कर सकते हैं। बीज की सब्सिडी हेतु कृषक को रसीद के साथ जिला कृषि अधिकारी से अनुरोध करना होगा। सब्सिडी की रकम 10 दिनों में खातों में स्थानान्तरित होगी। कृषकों द्वारा इस मेले के लिए 26 मई तक पंजीकरण कराया जा सकता है।
- खरीफ 2015 के लिए फसलों के बीमा कराने की अवधि संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना में 1 अप्रैल से 31 जुलाई व मौसम आधारित फसल बीमा योजना में 1 अप्रैल से 30 जून, 2015 तक है। अतः मौसम की अनिश्चितताओं को देखते हुए कृषकों से अनुरोध है कि अपनी फसलों का बीमा अपने नजदीकी सहकारी या व्यावसायिक बैंकों के माध्यम से अवश्य करायें।
- कृषि विभाग द्वारा चलायी जा रही पारदर्शी किसान योजना के अंतर्गत कृषि निवेश, कृषि यंत्र, बीज, कृषि रसायनों को प्राप्त करने हेतु अपना रजिस्ट्रेशन कराएँ।
- रबी फसलों में नुकसान की भरपाई हेतु कृषकों को सलाह दी जाती है कि वह कुक्कुट पालन, बकरी पालन, भेड़ पालन, भैंस पालन करें इससे उनकी अतिरिक्त आय होगी।
- धान का क्षेत्रफल न बढ़ाकर उत्पादकता बढ़ाने पर बल दिया जाय। लम्बी अवधि की धान की प्रजातियों की नर्सरी पहले डालें।

## धान की खेती

- पूर्वी उत्तर प्रदेश के जनपदों में लम्बी अवधि की धान की प्रजातियों स्वर्णा, साँभा महसूरी व महसूरी की पौधशाला में 20–30 मई तक बुआई करें।
- अधिक जल भराव वाले क्षेत्रों हेतु जहां एक मीटर से अधिक पानी लगा रहता है, धान की संस्तुत प्रजातियों यथा जलनिधि एवं जलमग्न की सीधी बुआई का उचित समय है, बुआई करें। उन क्षेत्रों में जहां खेत में पानी 50 से 100 सेमी. तक कम से कम 30 दिन भरा रहता है रोपाई हेतु जल लहरी एवं जलप्रिया की नर्सरी 10 जून तक अवश्य डाल दें।
- सामयिक बाढ़ वाले क्षेत्रों हेतु बाढ़ अवरोधी, स्वर्णा सब–1, नरेन्द्र मयंक एवं जलपुष्प तथा कम जल भराव वाले क्षेत्रों हेतु जल लहरी एवं एन.डी.आर.–8002 प्रजातियों के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के प्रथम सप्ताह में नर्सरी डाली जा सके।
- धान की मध्यम अवधि वाली प्रजातियां यथा नरेन्द्र धान–359, मालवीया धान–36, नरेन्द्र धान–2064, नरेन्द्र धान–2065 आदि के बीज की व्यवस्था करें। संकर प्रजातियों यथा एराइज–6444, 6201, पी.एच.बी.–71, नरेन्द्र संकर धान–2, 3, के.आर.एच.–2, पी.आर.एच.–10, जे.के.आर.एच.–401 आदि के बीज की व्यवस्था करें।
- नर्सरी डालने के लिए शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज पूर्व शोधित न हो तो धान की नर्सरी डालने से पूर्व बीज शोधन सुनिश्चित करें। यदि जीवाणु झुलसा या जीवाणुधारी रोग की समस्या हो तो 25 किग्रा0 बीज के लिए 4 ग्राम स्टेप्टोमाइसीन सल्फेट या 40 ग्राम प्लान्टोमाइसीन को पानी में मिलाकर रात भर भिगो दें। दूसरे दिन छाया में सुखाकर नर्सरी डालें।
- जिन क्षेत्रों में शाकाणु झुलसा की समस्या है तथा बीज शोधित न हो, ऐसी दशा में उनमें 25 किग्रा0 बीज को रातभर पानी में भिगोने के बाद दूसरे दिन अतिरिक्त पानी निकाल देने के बाद 75 ग्राम थीरम या 50 ग्राम

कार्बेन्डाजिम को 8–10 लीटर पानी में घोलकर बीज में मिला दिया जाये इसके बाद छाया में अंकुरित करके नर्सरी डाली जायें।

- बीज शोधन हेतु 5 ग्राम प्रति किग्रा. ट्राइकोडर्मा का प्रयोग किया जाये।

**मक्का की खेती**

- अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए मक्का की देर से पकने वाली संकर प्रजातियों गंगा–11, सरताज, एच.क्यू. पी.एम.–5, प्रो–316 (4640), बायो–9681, वाई–1402 तथा संकुल किस्म प्रभात आदि की बुआई 15 मई से करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज बोने से पूर्व 1 किग्रा0 बीज को 2.5 ग्रा. थीरम से शोधित करना चाहिये/बीज को इमिडाक्लोप्रिड 2 ग्रा./किग्रा. से बीज को शोधित करना चाहिए।

**जायद फसलों की खेती**

**उर्द/मूँग**

- उर्द/मूँग में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- उर्द/मूँग में कीटों से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफास 40 ई.सी. या डाईमेथोएट 30 ई.सी. का संस्तुति अनुसार छिड़काव करें।

**सूरजमुखी**

- सूरजमुखी में बीज पड़ने हेतु परसेंचन क्रिया नितान्त आवश्यक है। परसेंचन हेतु अच्छी तरह फूल आ जाने पर हाथ में दस्ताने पहन कर या किसी मुलायम रोयेंदार कपड़े को लेकर सूरजमुखी के मुण्डकों पर चारों ओर धीरे से घुमा दें। पहले फूल के किनारे वाले भाग पर, फिर मध्य के भाग पर यह क्रिया प्रातः काल 7.30 बजे तक करनी चाहिये।

**गन्ना**

- फरवरी, मार्च में बोये गन्ने में यदि अभी तक टापड्रेसिंग नहीं की गयी है तो सिंचाई उपरान्त 50 किग्रा. नत्रजन/हे. (110 किग्रा. यूरिया) की दर से जड़ के पास टॉपड्रेसिंग करें तथा गुड़ाई करें।
- गन्ने में 15–20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई कर नमी बनाये रखें तथा खरपतवार नियंत्रण हेतु आवश्यकतानुसार गुड़ाई करें।
- गन्ने में जल संरक्षण हेतु गन्ने की पत्तियों का मल्च प्रयोग करें।
- शरदकालीन गन्ने में हल्की मिट्टी चढ़ायें, जिससे देर से आने वाले कल्ले न निकलें तथा गन्ना बढ़वार के साथ न गिरे।
- ऊनी माहू (वूली एफिड) दिखाई देने पर मेटासिस्टाक्स 0.05 प्रतिशत का छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर दो या तीन बार करें।
- अंकुर बेधक, जड़ बेधक, चोटी बेधक से ग्रसित पौधों को समय–समय पर निकालें तथा अण्ड–समूहों को एकत्र कर नष्ट कर दें।
- शल्क कीट एवं गुलाबी चिकटा का प्रकोप होने पर मैलाथियान 0.01 प्रतिशत या डाईमेथोएट 0.08 प्रतिशत का गन्ने की 4–5 पोरीयुक्त अवस्था में सूखी पत्तियों के निकालने के बाद छिड़काव करें।
- काला चीकटा का प्रकोप होने पर क्लोरपायरीफास/क्यूनालफास का 0.2 किग्रा. मूल तत्व प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें।
- पायरीला का प्रकोप होने पर तथा परजीवी (इपीरिकेनिया मेलानोल्यूका) न पाये जाने की स्थिति में मेटाराइजियम एनआईसोप्ली का संस्तुति अनुसार पर्णीय छिड़काव करें।
- सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर एसीफेट 0.1 प्रतिशत या मोनोक्रोटोफास 0.3 किग्रा. मूल तत्व प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।

**बागवानी**

- फलों के नये बाग लगाने के लिये उपयुक्त खेत का चयन एवं रेखांकन कर गड्ढों की खुदाई कर खुला छोड़ दें

जिससे कीट व्याधि नष्ट हो जाएं।

- आम के बागों में फल मक्खी की संख्या जानने एवं उसके नियंत्रण हेतु कार्बरिल 0.2 प्रतिशत+प्रोटीन हाइड्रोलाइसेट या सीरा 0.1 प्रतिशत अथवा मिथाइल यूजीनाल 0.1 प्रतिशत+मैलाथियान 0.1 प्रतिशत के घोल को डिब्बों में डालकर पेड़ों पर ट्रैप लगायें।
- आम में कोयलिया और आन्तरिक विगलन के नियंत्रण के लिये 1 प्रतिशत बोरेक्स का 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें।
- आम के बागों में हल्की नमी बनाये रखें तथा सूटी मोल्ड (काली फफूँदी) का प्रकोप होने पर बचाव के लिये बाग की सफाई करें व घुलनशील गंधक, मोनोक्रोटोफास तथा गोंद (0.2, 0.05 और 0.3 प्रतिशत क्रमशः) का मिश्रण बनाकर या 2 प्रतिशत स्टार्च का छिड़काव करें।
- केला भृंग (बनाना बीटिल) के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी या फोरेट 10 जी एक चम्मच भर कर गोफे में डाले।
- केले की फलों/डंठलों पर काले भूरे धब्बे दिखाई देने पर कापर आक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें।
- नींबू में सफेद मक्खी व साईला के नियंत्रण हेतु डाईमिथोएट 30 ई.सी. 1.6 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- नींबू की कैंकर व्याधि के नियंत्रण हेतु ब्लाइटाक्स 0.3 प्रतिशत अथवा बोर्डो मिक्चर का छिड़काव करें।
- लीची के फलों को फटने से बचाने के लिये बाग में सिंचाई कर आवश्यकतानुसार नमी बनाये रखें।

## सब्जियों की खेती

- सब्जियों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- सब्जियों में यथासम्भव जैव नाशिजीवियों का ही प्रयोग करें।
- खरीफ प्याज की नर्सरी यदि नही डाली है तो शीघ्र नर्सरी डालें।
- अरबी, हल्दी एवं अदरक की बुआई सुनिश्चित करें।

## पशुपालन

- बड़े पशुओं में गला घोटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी. क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण करायें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालय पर उपलब्ध है।
- पशुओं को धूप से बचाने के लिए दोपहर में छायादार स्थान पर बाँधें तथा सुबह एवं सायंकाल में ही चराई करायें।
- पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें।
- दुहान से पहले पशुओं को सुबह शाम ताजे पानी से नहलायें और खरहरा करें जिससे पशुओं में दूध उत्पादन कम न हो।
- पशुओं को तीन माह में एक बार कृमिनाशी दवा का पान अवश्य करायें।
- जायद चारा फसलों में सिंचाई करते रहें जिससे कि फसल की बढ़वार प्रभावित न होने पाये। पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलायें।
- पशुओं को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) ना खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीला तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।

## मत्स्य पालन

- हैचरी स्वामी मत्स्य बीज उत्पादन हेतु ब्रूडर्स का पृथक्कीकरण (नर व मादा अलग–अलग) कर लें। नर्सरियों की तैयारी कर लें। उत्प्रेरित प्रजनन के लिए हार्मोन (ओवाप्रिम, ओवाटाइड) की व्यवस्था करें तथा पम्पसेट आदि की मरम्मत ब्रीडिंग सीजन प्रारम्भ होने से पूर्व करा लें।
- तालाब का चुनाव करने का उचित समय है अतः मत्स्य पालक उपयुक्त तालाब का चुनाव करें। मत्स्य पालन हेतु

0.2 हे. से 5 हे. तक के ऐसे तालाबों का चयन किया जाय जिसमें वर्ष भर अथवा 8–9 माह पानी भरा रहें। तालाबों के लिए जल की आपूर्ति का साधन होना चाहिए जिससे तालाबों में वर्ष भर एक से दो मीटर पानी सुनिश्चित किया जा सके।

- नये तालाब के निर्माण के लिए मत्स्य विभाग व ग्राम विकास विभाग के अधिकारियों से परामर्श करें जिससे कि सरकार द्वारा दिये जाने वाली आर्थिक सहायता की जानकारी प्राप्त की जा सके। नये तालाबों का निर्माण कार्य व पुराने तालाबों के सुधार का कार्य जून तक अवश्य पूर्ण कर लें।
- उर्वरा शक्ति की वृद्धि हेतु 250 किग्रा. प्रति हे. चूना तथा सामान्यतः 10–20 कु./हे./माह गोबर की खाद प्रयोग करें।
- कुछ जलीय वनस्पतियॉ मत्स्य पालन हेतु समस्यायें उत्पन्न करती है। नरई/नरकुल की रोकथाम के लिये तालाब की गहराई 4 से 5 फुट तक कर दें। जलस्तर 4 से 5 फुट होने पर नरई का बीज तालाब में नहीं जमेगा। जो तालाब जलकुम्भी ग्रस्त है और तालाब गर्मी में सूख जाते है उन्हें ट्रैक्टर से जुताई करा दें। जलकुम्भी सड़कर खाद बन जायेगी।
- बड़ी मछलियों को निकालकर विक्रय कर दें।
- जिन तालाबों में विगत 7–8 वर्षों से लगातार मत्स्य पालन किया जा रहा है और जिन तालाबों में गत वर्ष मत्स्य रोग देखा गया था उन्हें गर्मी के मौसम में सुखा दें तथा दो कु. प्रति हे. की दर से चूने का बुरकाव करें तथा मिट्टी को पलटकर उसको सूखने दें।
- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियॉ पाई जा रही है उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें एवं तालाब को गर्मी में सुखाने के पश्चात आगामी मौसम में मत्स्य पालन करें।
- जो भी मत्स्य पालक मत्स्य बीज उत्पादन की प्रक्रिया से जुड़े हैं वह अपनी नर्सरियों की तैयारी कर लें।

**रेशम पालन**

- सिंचित क्षेत्र में शहतूत पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- शहतूत/अर्जुन की नर्सरी की नियमित सिंचाई करते रहें।
- असिंचित क्षेत्र में शहतूत/अर्जुन पौधों के चारों तरफ मिट्टी की गुड़ाई कर नमीं संरक्षित रखने का प्रयास करें।
- नये क्षेत्र में वृक्षारोपण कराने हेतु मृदा कार्य पूर्ण कराया जाय।

**वानिकी**

- कंजी, सेमल, गुलमोहर इत्यादि के बीज प्राप्त करने हेतु निकटतम वनाधिकारी से सम्पर्क करें। पौधशाला में पौधों की सिंचाई आवश्यकतानुसार करें।
- मिट्टी ऊसरीली होने पर जिप्सम प्राप्त करने हेतु स्थानीय वनाधिकारी अथवा कृषि अधिकारी से सम्पर्क करें तथा खेत की मिट्टी का परीक्षण करायें।
- नर्सरी में संरक्षित वानिकी पौध को तेज धूप से बचाव हेतु छाया में रखें।
- पौधों के रोपण हेतु गड्ढ़ों की खुदाई का कार्य प्रारम्भ करें।

**क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 27 मई, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।**

**नोटः**

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर **18001801717** है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।